नासरत का यीशु

Randolph Dunn

Jesus of Nazareth

नासरत का यीशु

"एक आदमी जो भगवान से आया है"

भविष्यवाणियां और चश्मदीद गवाह

पाठ 1

यीशु के बारे में साठ से अधिक (60) पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ हैं, जिनमें से सभी पूरी हुईं। इन भविष्यवाणियों ने उत्पत्ति से शुरू होकर पुराने नियम की पूरी अवधि को कवर किया और मलाकी में समाप्त हुई। इनमें से पच्चीस होने की संभावना एक हजार ट्रिलियन में 1 से अधिक होती है।

पुराने नियम में यीशु के बारे में कई भविष्यवाणियाँ हैं, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सिर्फ 25 भविष्यवाणियाँ करने की क्या संभावनाएँ थीं जो कई वर्षों बाद पैदा होने वाले थे और इन भविष्यवाणियों के सच होने की क्या संभावनाएँ थीं?

और n भविष्यवाणियों के सच होने की समग्र संभावना pn बराबर (1/5) या एक हज़ार ट्रिलियन में से एक मौका होगा यदि n 25 के बराबर है। (आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म, पृष्ठ 178) भले ही भविष्यवाणी के बारे में कुंवारी जन्म को बाहर रखा जाए, तो संख्या खगोलीय रूप से बड़ी रहती है। यह मान लेना बहुत बड़ा है कि यह गलती से हुआ! पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183। जाहिर है, पूरी हुई भविष्यवाणियां भविष्यवाणी की पुष्टि करती हैं। पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183। जाहिर है, पूरी हुई भविष्यवाणियां भविष्यवाणी की पुष्टि करती हैं। पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183। जाहिर है, पूरी हुई भविष्यवाणियां भविष्यवाणी की पुष्टि करती हैं।

यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को पूरा करने आया था। पुराने नियम ने भविष्यवाणी को दर्ज किया और नए नियम के लेखक स्पष्ट रूप से अपनी पूर्ति दिखाते हैं। यह केवल एक प्रमाण है कि यीशु वह था जिसे उसने नासरत के यीशु के रूप में परमेश्वर होने का दावा किया था।

<u>यीशु</u>

“मेरे भेजनेवाले पिता ने आप ही मेरे विषय में गवाही दी है। तू ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा, और न उसका वचन तुम में बसता है, क्योंकि उसके भेजे हुए की प्रतीति नहीं करते। तुम लगन से शास्त्रों का अध्ययन करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनके द्वारा तुम्हें अनन्त जीवन मिलता है। ये शास्त्र [पुराना नियम] हैं जो मेरे बारे में गवाही देते हैं" (यूहन्ना 5:37-39)।

<u>प्रेरित पतरस</u>

ईसाई क्राइस्ट का नाम इसलिए पहनते हैं क्योंकि क्राइस्ट उनके भगवान, शिक्षक, मार्गदर्शक, उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता, आदर्श, महायाजक, आशा, पाप के लिए बलिदान और बहुत कुछ है। हमारे विश्वास के लिए चट्टान-ठोस नींव पतरस के स्वीकारोक्ति की सच्चाई है - "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 16:16)। यीशु वास्तविक है और बाइबिल सत्य है। यीशु के बारे में जानने के लिए वह सब कुछ है जो बाइबल में पाया जाता है। मनुष्य का सारा इतिहास उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। यीशु मानव नाटक का केंद्रीय पात्र है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दुनिया का इतिहास दो कालखंडों में विभाजित है: ईसा से पहले (ईसा पूर्व) और ईसा के बाद (ई.)

<u>प्रेरित जॉन</u>

“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह शुरुआत में परमेश्वर के साथ थे। उसके बिना कुछ भी नहीं बन सकता; उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया है। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों का प्रकाश था। अँधेरे में उजाला चमकता है, लेकिन अँधेरे ने उसे समझा नहीं। एक मनुष्य आया जो परमेश्वर की ओर से भेजा गया था; उसका नाम जॉन था। वह उस ज्योति के विषय में साक्षी देने आया, कि उसके द्वारा सब लोग विश्वास करें। वह स्वयं प्रकाश नहीं था; वह केवल प्रकाश के साक्षी के रूप में आया था। प्रत्येक मनुष्य को प्रकाश देने वाला सच्चा प्रकाश संसार में आने वाला था। वह संसार में था, और यद्यपि संसार उसके द्वारा बनाया गया था, संसार ने उसे नहीं पहचाना। वह उसके पास आया जो उसका था, परन्तु अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। तौभी जितनों ने उसे ग्रहण किया, वरन उसके नाम पर विश्वास करनेवालों को,

“वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच अपना निवास स्थान बना लिया। हम ने उसकी महिमा, अर्थात् उस एकलौते की महिमा देखी है, जो पिता की ओर से अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण हुई है" (यूहन्ना 1:14)।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

"वह [यूहन्ना] चिल्लाकर कहता है, 'यह वही है जिसके विषय में मैं ने कहा था, कि जो मेरे बाद आता है वह मुझ से बढ़कर है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था।' उनकी कृपा की परिपूर्णता से हम सभी को एक के बाद एक आशीर्वाद मिला है। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी; अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आई। किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा, परन्तु एक ही परमेश्वर ने, जो पिता के पास है, उसे प्रगट किया है" (यूहन्ना 1:15-18)।

“यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके प्रार्थना कीपिताजी, समय आ गया है। अपने पुत्र की महिमा करो, कि तुम्हारा पुत्र तुम्हारी महिमा करे। क्योंकि तू ने उसे सब लोगों पर अधिकार दिया, कि वह उन सभों को अनन्त जीवन दे, जिन्हें तू ने उसे दिया है। अब यह अनन्त जीवन है: कि वे तुम्हें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, और यीशु मसीह, जिसे तुमने भेजा है, जान सकते हैं। जो काम तू ने मुझे करने को दिया है, उसे पूरा करके मैं ने तुझे पृथ्वी पर महिमा दी है। और अब हे पिता, अपने साम्हने मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के आरम्भ से पहिले मेरी तेरे साथ थी” (यूहन्ना 17:1-5)।

पिलातुस, रोमन गवर्नर

"तब पीलातुस वापस महल में गया, और यीशु को बुलवाकर पूछा, 'क्या तू यहूदियों का राजा है?' 'क्या यह आपका अपना विचार है,' यीशु ने पूछा, 'या दूसरों ने आपसे मेरे बारे में बात की? "क्या मैं एक यहूदी हूँ?' पिलातुस ने उत्तर दिया। 'तेरी प्रजा और महायाजकों ने ही तुझे मेरे वश में कर दिया। तुमने क्या किया है?' यीशु ने कहा, 'मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए संघर्ष करते। लेकिन अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है।' 'तो फिर तुम एक राजा हो!' पिलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम ठीक कह रहे हो कि मैं एक राजा हूँ। वास्तव में मेरा जन्म इसी कारण से हुआ है, और मैं जगत में इसलिये आया हूं, कि सत्य की गवाही दूं। सच्चाई के पक्ष में हर कोई मेरी बात सुनता है।' 'सत्य क्या है?'" "पीलातुस ने पूछा" (यूहन्ना 18:33-38)।

यहूदियो

"हमारे पास एक कानून है, और उस कानून के अनुसार उसे मरना चाहिए, क्योंकि उसने भगवान का पुत्र होने का दावा किया था। जब पीलातुस ने यह सुना, तो वह और भी अधिक डर गया, और वापस महल के भीतर चला गया। 'आप कहां से हैं?' उसने यीशु से पूछा, परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। 'क्या तुम मुझसे बात करने से इनकार करते हो?' पिलातुस ने कहा। 'क्या तुम नहीं जानते कि मेरे पास तुम्हें मुक्त करने या तुम्हें सूली पर चढ़ाने की शक्ति है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम्हें ऊपर से न दिया जाता तो तुम मुझ पर कोई अधिकार नहीं रखते। इसलिथे जिस ने मुझे तुम्हारे वश में किया है वह और भी बड़े पाप का दोषी है" (यूहन्ना 19:7-11)।

इथियोपिया का हिजड़ा

"और उस ने उत्तर देकर कहा, 'मैं विश्वास करता हूं, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'" (प्रेरितों के काम 8:37)।

सारांशये और कई अन्य मार्ग स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि यीशु:

a) वह ईश्वर था जिसके द्वारा सब कुछ बनाया गया था

b) मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए खुद को दीन किया

ग) पाप के लिए सिद्ध बलिदान बन गया।

"यह सब इसलिए किया गया कि जिसने भी उसे ग्रहण किया, उसके नाम पर विश्वास करने वालों को ईश्वर की संतान होने का अधिकार दिया - नैसर्गिक वंश से पैदा हुए बच्चे, न मानव निर्णय या पति की इच्छा से, बल्कि ईश्वर से पैदा हुए" (यूहन्ना 1:12-13)।

प्रशन

1. सैकड़ों साल पहले कई अलग-अलग भविष्यवक्ताओं द्वारा एक व्यक्ति में बहुत कम वर्षों में पूरी की जा रही भविष्यवाणियां हैं:

एक। _____अकल्पनीय

बी। _____अविश्वसनीय

सी। _____भविष्यवाणी की पुष्टि करता है

2. नए नियम के प्रत्यक्षदर्शियों के पास यीशु के परमेश्वर के पुत्र होने के बारे में कहने के लिए बहुत कम था।

टी. _____ एफ._____

3. केवल पतरस ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।

टी. _____ एफ. _____

4. यीशु को सारा अधिकार परमेश्वर ने क्यों दिया?

एक। _____ सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए

बी। _____ उन लोगों को अनन्त जीवन दें जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं

सी। _____ उसे एक पापरहित जीवन जीने दें

5. यीशु के बारे में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

एक। ___ सब कुछ यीशु, भगवान, पुत्र द्वारा बनाया गया था

बी। ___यीशु ने मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए स्वयं को दीन किया

सी। ___ यीशु पाप के लिए सिद्ध बलिदान बन गया

डी। ___ सब से ऊपर

इ। ___ए और सी

धर्मनिरपेक्ष लेखक यीशु के बारे में क्या कहते हैं

पाठ 2

हालाँकि बाइबल के कथन इस बात का प्रमाण हैं कि यीशु एक वास्तविक व्यक्ति थे, बाइबल के बाहर भी इस बात की पुष्टि करने वाले काफी प्रमाण हैं कि यीशु एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे, जैसे कि बाइबल उन्हें प्रस्तुत करती है। कुछ प्राचीन गैर-ईसाई इतिहासकारों के निम्नलिखित बाहरी लेखन यीशु के बारे में बाइबल के बयानों का सहयोग करते हैं:

मत्ती कहता है, "उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था ... और बैठे हुए, वे वहां उस पर पहरा देते रहे ... छठे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक सारे देश में अन्धकार छा गया" (मत्ती 27:35-36; 45-46)। मरकुस ने इसे इस तरह से कहा, "छठे घंटे तक नवें घंटे तक सारे देश में अन्धकार छा गया" (मरकुस 15:33)।

<u>थैलस</u>

थेलस, सामरी में जन्मे इतिहासकार, जो 52 ईस्वी सन् के आसपास रोम में रहते थे और काम करते थे, जूलियस अफ्रीकनस, जो कि दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध के एक ईसाई क्रोनोग्राफर थे, ने उद्धृत किया। 1 "थैलस, अपने इतिहास की तीसरी पुस्तक में, इस अंधेरे को एक ग्रहण के रूप में समझाता है। सूरज की।" अफ्रीकनस ने रिपोर्ट पर अपनी आपत्ति जताते हुए कहा कि पूर्णिमा के दौरान सूर्य का ग्रहण नहीं हो सकता है, जैसा कि फसह के समय यीशु की मृत्यु के समय हुआ था। थैलस के संदर्भ का बल यह है कि यीशु की मृत्यु की परिस्थितियों को पहली शताब्दी के मध्य में इंपीरियल सिटी में जाना जाता था और चर्चा की जाती थी। यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने का तथ्य उस समय तक काफी अच्छी तरह से ज्ञात हो गया होगा, इस हद तक कि थैलस जैसे अविश्वासियों ने अंधेरे के मामले को एक प्राकृतिक घटना के रूप में समझाना आवश्यक समझा। ... विडंबना यह है कि थैलस'

<u>मारा बार-सेरापियन</u>

"ब्रिटिश संग्रहालय में एक पांडुलिपि मारा बार-सेरापियन नामक एक सीरियाई द्वारा अपने बेटे को भेजे गए एक पत्र के पाठ को संरक्षित करती है। पिता ने सुकरात, पाइथागोरस, और यहूदियों के बुद्धिमान राजा जैसे बुद्धिमान पुरुषों को सताने की मूर्खता का चित्रण किया, जिसे संदर्भ स्पष्ट रूप से यीशु के रूप में दर्शाता है। "सुकरात को मौत के घाट उतारने से एथेनियाई लोगों को क्या फायदा हुआ? अकाल और प्लेग उनके अपराध के लिए एक फैसले के रूप में आया। पाइथागोरस को जलाने से समोस के लोगों को क्या फायदा हुआ? एक पल में उनकी भूमि रेत से ढक गई। क्या फायदा क्या यहूदियों को अपने राजा को मारने से लाभ हुआ? इसके ठीक बाद उनके राज्य को समाप्त कर दिया गया था। परमेश्वर ने इन तीन बुद्धिमानों का न्यायोचित प्रतिशोध लिया: एथेनियाई लोग भूख से मर गए; सैमियन समुद्र से डूब गए; यहूदी, बर्बाद हो गए और अपने से खदेड़ दिए गए भूमि, पूर्ण फैलाव में रहते हैं। ... और न ही बुद्धिमान राजा भलाई के लिए मरा; वह उस शिक्षा में जीवित रहा जो उसने दी थी"।3

<u>कुरनेलियुस टैसिटस</u>

लगभग 50 ईस्वी से 100 ईस्वी तक रहने वाले एक रोमन इतिहासकार ने नीरो की आग के बारे में लिखा। "नतीजतन, रिपोर्ट से छुटकारा पाने के लिए, नीरो ने अपराध बोध को तेज कर दिया और अपने घृणित कार्यों के लिए नफरत करने वाले वर्ग पर सबसे उत्तम यातनाएं दीं, जिन्हें आबादी द्वारा ईसाई कहा जाता था। क्राइस्टस, जिनसे नाम की उत्पत्ति हुई थी, को इस दौरान अत्यधिक दंड का सामना करना पड़ा। हमारे एक खरीददार, पोंटियस पिलातुस के हाथों तिबेरियस का शासन।4

प्लिनियस सेकेंडस

112 ईस्वी में एक रोमन गवर्नर ने सम्राट ट्रोजन को लिखा "वे प्रकाश होने से पहले एक निश्चित निश्चित दिन पर मिलने की आदत में थे, जब उन्होंने मसीह को भगवान के रूप में एक गान गाया, और खुद को एक गंभीर शपथ से बंधे थे कि कोई भी दुष्ट काम न करें ... जिसके बाद उनका अलग होना, और फिर भोजन करने के लिए फिर से मिलना, लेकिन एक सामान्य प्रकार का भोजन करना उनका रिवाज था। "5

सेटोनियस

हैड्रियन के शासनकाल के दौरान इंपीरियल हाउस के एक एनालिस्ट और कोर्ट अधिकारी ने लाइफ ऑफ क्लॉडियस में लगभग 120 ईस्वी सन् में लिखा था। "चूंकि चेस्टस के उकसाने पर यहूदी लगातार गड़बड़ी कर रहे थे, उसने (क्लॉडियस) उन्हें रोम से निष्कासित कर दिया।" 6 एडवर्ड सी। व्हार्टन फिर कहते हैं, "इस उद्धरण की प्रसिद्धि का कारण इस तथ्य के कारण है कि ल्यूक, लगभग साठ वर्षों पहले, इसी घटना को प्रेरित पौलुस ने अक्विला और प्रिस्किल्ला नामक एक ईसाई यहूदी जोड़े के साथ जुड़ने के कारण के रूप में दर्ज किया था (प्रेरितों के काम 18:1-2)। फिर से, ऐतिहासिक संदर्भ में मसीह का उल्लेख अतिरिक्त में देखा गया है- बाइबिल साहित्य।"7

फ्लेवियस जोसेफस

जोसेफस का एक दिलचस्प अवलोकन है। "इस समय के बारे में एक बुद्धिमान व्यक्ति यीशु, यदि हम वास्तव में उसे एक आदमी कहते हैं, क्योंकि वह अद्भुत काम करता था, पुरुषों का शिक्षक था जो खुशी से सच्चाई को स्वीकार करता था। उसने कई यहूदियों और कई यूनानियों पर जीत हासिल की। जब पीलातुस ने हमारे अपने अगुवों के कहने पर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, तो जो पहिले से उस से प्रेम रखते थे, वे न रुके, क्योंकि वह तीसरे दिन उन्हें फिर जीवित दिखाई दिया, जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की और उसके विषय में और भी बहुत सी अद्भुत बातें कहीं, और अब भी मसीहियों की वह जाति जो उसके नाम पर रखी गई है, अभी तक समाप्त नहीं हुई है।”8

प्रारंभिक यहूदी और अन्यजाति लेखक

एफएफ ब्रूस का निम्नलिखित उद्धरण इसे बहुत स्पष्ट रूप से सारांशित करता है। "शुरुआती यहूदी और अन्यजातियों के लेखकों के साक्ष्य के बारे में और जो कुछ भी सोचा जा सकता है ... यह कम से कम उन लोगों के लिए स्थापित करता है, जो ईसाई लेखन की गवाही को अस्वीकार करते हैं, स्वयं यीशु के ऐतिहासिक चरित्र। कुछ लेखक एक की कल्पना के साथ खिलवाड़ कर सकते हैं 'क्राइस्ट-मिथ', लेकिन वे ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर ऐसा नहीं करते हैं। जूलियस सीज़र की ऐतिहासिकता के रूप में एक निष्पक्ष इतिहासकार के लिए मसीह की ऐतिहासिकता स्वयंसिद्ध [स्व-स्पष्ट rd] है। यह नहीं हैइतिहासकार जो 'क्राइस्ट-मिथ' सिद्धांतों का प्रचार करते हैं।" 9

प्रशन

1. जूलियस अफ्रिकिनस के हवाले से थैलस ने यीशु के क्रूस पर चढ़ने के मैथ्यूज खाते की पुष्टि की है।
   टी. _____ एफ. _____

2. एक रोमी इतिहासकार कुरनेलियुस टैसिटस ने लिखा कि मसीह ने “अत्यंत दण्ड भोगा।”

   टी. _____ एफ._____

3. गैर-ईसाई लेखक बाइबल के बाहर इस बात का सबूत देते हैं कि बाइबल के वृत्तांत की पुष्टि करते हुए कि असामान्य शक्तियों वाला एक व्यक्ति गलील/यहूदिया में रहता था।

   टी. _____ एफ. _____

4. कोई रोमन केवल यहूदी इतिहासकार बाइबिल के खाते का समर्थन नहीं करता है कि यीशु को पोंटियस पिलाट द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था।

   टी. _____ एफ. _____

5. जोसीफस ने अपने लेखों में देखा कि पीलातुस ने यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने की निंदा की और तीन दिन बाद यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ।
   टी. ____ एफ. ____

1. एफएफ बुसे, द न्यू टेस्टामेंट डॉक्यूमेंट्स, एर्डमेन्स, पी। 113.
2. एडवर्ड सी. व्हार्टन, ईसाई धर्म: इतिहास का एक स्पष्ट मामला हावर्ड पी। 7.
3. ब्रिटिश म्यूजियम सिरिएक Mss., FF ब्रूस, जीसस एंड क्रिश्चियन ऑरिजिंस आउटसाइड द न्यू टेस्टामेंट, पृ. 31.
4. इतिहास और इतिहास, 15:44। ब्रिटानिका ग्रेट बुक्स से, वॉल्यूम। 15, पृ. 168.
5. पत्र, 10:96।
6. क्लौडियस का जीवन, 25:4
7. एडवर्ड सी. व्हार्टन, ईसाई धर्म: इतिहास का एक स्पष्ट मामला, हावर्ड पी। 1 1।
8. पुरावशेष, 18,3। 3.
9. एफएफ ब्रूस, द न्यू टेस्टामेंट डॉक्यूमेंट्स। पी. 119. उपरोक्त सभी का उल्लेख एडवर्ड सी. व्हार्टन ने अपनी पुस्तक क्रिश्चियनिटी: ए क्लियर केस ऑफ हिस्ट्री में किया है।

यीशु का प्रारंभिक जीवन

अध्याय 3

भविष्यद्वक्ता यशायाह के माध्यम से परमेश्वर ने कहा, "यहोवा स्वयं तुम्हें एक चिन्ह देगा: कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी" (यशायाह 7:14)।

तब परमेश्वर ने स्वर्गदूत जिब्राईल को गलील के एक नगर नासरत में एक कुंवारी कन्या के पास भेजा, जो दाऊद के वंशज यूसुफ नाम के एक व्यक्ति से विवाह करने का वचन देती है। कुँवारी का नाम मरियम था। स्वर्गदूत ने उसके पास जाकर कहा, "नमस्कार, हे अति कृपालु! यहोवा तुम्हारे साथ है (लूका 1:26-28)।

उसकी माता मरियम को यूसुफ से विवाह करने का वचन दिया गया था, परन्तु उनके एक साथ आने से पहले, वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती पाई गई। क्योंकि यूसुफ उसका पति एक धर्मी व्यक्ति था और वह उसे सार्वजनिक अपमान के लिए बेनकाब नहीं करना चाहता था, उसके मन में उसे चुपचाप तलाक देने का था। परन्तु यह सोचकर, यहोवा का एक दूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया, और कहा, दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी के रूप में अपने घर ले जाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है वह एक पुत्र को जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा (मत्ती 1:18-21)।

यह सब उस बात को पूरा करने के लिए हुआ जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से कही थी: "कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसे इम्मानुएल कहेंगे" - जिसका अर्थ है, परमेश्वर हमारे साथ (मत्ती 1:23) .

<u>जन्म</u>

उन दिनों सीज़र ऑगस्टस ने एक फरमान जारी किया कि पूरे रोमन दुनिया की जनगणना की जानी चाहिए। (यह पहली जनगणना थी जो सीरिया के राज्यपाल के समय हुई थी।) और सभी अपने-अपने शहर में पंजीकरण कराने गए। सो यूसुफ भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया को गया, और दाऊद के नगर बेतलेहेम को गया, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश का था। वह वहाँ मरियम के साथ पंजीकरण कराने गया, जिसने उससे शादी करने का वचन दिया था और एक बच्चे की उम्मीद कर रही थी। जब वे वहाँ थे, तब बच्चे के जन्म का समय आया, और उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया। उसने उसे कपड़े में लपेटा और एक चरनी में रखा, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी (लूका 2:1-7)।

मिस्र के लिए पलायन

यहूदिया के बेतलेहेम में यीशु के जन्म के बाद, राजा हेरोदेस के समय में, मागी [बुद्धिमान एनकेजेवी] पूर्व से यरूशलेम आए और पूछा, 'वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा पैदा हुआ है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी पूजा करने आए हैं।' जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम व्याकुल हो उठा (मत्ती 2:1-3)।

और स्वप्न में चितौनी पाकर हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से अपके देश को लौट गए। जब वे चले गए, तब यहोवा का एक दूत यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया। "उठो," उसने कहा, "बच्चे और उसकी माँ को ले जाओ और मिस्र को भाग जाओ। जब तक मैं तुझ से न कहूँ, तब तक वहीं रहना, क्योंकि हेरोदेस उस बालक को घात करने के लिथे ढूंढ़ने पर है" (मत्ती 2:12-13)।

नासरत में घर वापसी

हेरोदेस के मरने के बाद, यहोवा का एक दूत मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया और कहा, “उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश में चला जा, क्योंकि जो बालक के प्राण लेने का यत्न करते थे वे मर गए हैं। ।" सो वह उठा, और बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश को चला गया। परन्तु जब उसने सुना कि अर्खिलौस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में राज्य कर रहा है, तो वह वहां जाने से डर गया। स्वप्न में चितौनी पाकर वह गलील देश को चला गया, और जाकर नासरत नाम के नगर में रहने लगा। तो वह पूरा हुआ जो भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा गया था: "वह नासरी कहलाएगा" (मत्ती 2:19-23)।

युवा

हर साल उसके माता-पिता फसह के पर्व के लिए यरूशलेम जाते थे। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तब वे रीति के अनुसार पर्व पर गए। पर्व समाप्त होने के बाद, जब उसके माता-पिता घर लौट रहे थे, लड़का यीशु पीछे यरूशलेम में रहा, लेकिन वे इससे अनजान थे। यह सोचकर कि वह उनकी कंपनी में है, उन्होंने एक दिन के लिए यात्रा की। फिर वे उसे अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बीच ढूँढ़ने लगे। जब वे उसे न पा सके, तो उसे ढूँढ़ने के लिए यरूशलेम को लौट गए। तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर के आंगनों में शिक्षकों के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। हर कोई जिसने उसे सुना वह उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित था। जब उसके माता-पिता ने उसे देखा तो वे हैरान रह गए। उसकी माँ ने उससे कहा, “बेटा, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? मैं और तुम्हारे पिता बड़ी उत्सुकता से तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं।" "तुम मुझे क्यों ढूंढ रहे थे?" उसने पूछा। "क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर [व्यापार NKJV] में रहना है" (लूका 2:41-49)?

तब वह उनके साथ नासरत को गया और उनकी आज्ञा मानता रहा। लेकिन उसकी माँ ने इन सब बातों को अपने दिल में संजो कर रखा था। और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया (लूका 2:51-52)।

प्रशन

1. मरियम को यूसुफ से शादी करने का वचन दिया गया था, लेकिन उनके एक साथ आने से पहले, वह बच्चे के साथ पाई गई थी।
   टी. ____ एफ. ____

2. यीशु का जन्म यरूशलेम में हुआ था क्योंकि वह यहूदियों का राजा था।
   टी. ____ एफ. ____

3. यीशु याजकीय वंश का था, एक लेवी।
   टी. ____ एफ. ____

4. हेरोदेस के कारण, यूसुफ यीशु और उसकी माँ को मिस्र ले गया और हेरोदेस की मृत्यु के बाद वे इस्राएल लौट आए।
   टी. ____ एफ. ____

5. 12 साल की उम्र में यीशु ने मंदिर के शिक्षकों से सवाल पूछे।
   टी. ____ एफ. ____

यीशु अपने मिशन की शुरुआत

पाठ 4

<u>जॉन द बैपटाइज़र द्वारा बपतिस्मा</u>

"मैं पानी से बपतिस्मा देता हूं," जॉन ने उत्तर दिया, "लेकिन तुम्हारे बीच एक ऐसा खड़ा है जिसे आप नहीं जानते। वही मेरे पीछे आता है, जिसकी जूतियों के पट खोलने के योग्य मैं नहीं। यह सब यरदन के उस पार बैतनिय्याह में हुआ, जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था। दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखा और कहा, “देखो, परमेश्वर का मेम्ना, जो जगत का पाप उठा ले जाता है! मेरे कहने का यही मतलब था जब मैंने कहा, 'मेरे पीछे आने वाला एक आदमी मुझसे आगे निकल गया है क्योंकि वह मुझसे पहले था। मैं तो उसे नहीं जानता था, पर इसलिथे कि मैं जल से बपतिस्मा देने आया हूं, कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए" (यूहन्ना 1:26-28)।

तब यूहन्ना ने यह गवाही दी: “मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं स्वर्ग से उतरते और उस पर रहते हुए देखा। मैं उसे नहीं जानता, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिये भेजा है, उसने मुझ से कहा, कि जिस मनुष्य पर तुम आत्मा को उतरते और ठहरते देखते हो, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। मैंने देखा है और मैं गवाही देता हूं कि यह परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:26-34)।

<u>शैतान द्वारा प्रलोभित</u>

तब यीशु को आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान की परीक्षा हो। चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा था। परीक्षा देनेवाले ने उसके पास आकर कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह कि ये पत्थर रोटी बन जाएं। यीशु ने उत्तर दिया, “लिखा है: मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहता है।” तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और उसे मन्दिर के सबसे ऊंचे स्थान पर खड़ा कर दिया। "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो," उसने कहा, "अपने आप को नीचे गिरा दो। क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपके स्वर्गदूतोंको आज्ञा देगा, और वे तुझे अपके हाथ में उठा लेंगे, कि तेरे पांव में पत्यर न लगे। यीशु ने उसे उत्तर दिया, 'यह भी लिखा है: अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लेना।' फिर से, शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। "यह सब मैं तुम्हें दूंगा'" उसने कहा, 'यदि तुम झुक कर मेरी उपासना करोगे। यीशु ने उस से कहा, हे शैतान, मुझ से दूर हो, क्योंकि लिखा है, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना कर, और केवल उसी की उपासना कर। तब शैतान ने उसे छोड़ दिया, और स्वर्गदूत आकर उसके पास गए (मत्ती 4:1-11)।

<u>उनका मिशन</u>

जब शैतान ने यह सब प्रलोभन समाप्त कर दिया, तो उसने उसे एक उपयुक्त समय तक छोड़ दिया। यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आया, और उसके बारे में पूरे देश में खबर फैल गई। वह उनकी सभाओं में उपदेश देता था, और सब लोग उसकी प्रशंसा करते थे। वह नासरत को गया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ था, और सब्त के दिन अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया। और वह पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे सौंपी गई। उसे खोलकर, उसने वह स्थान पाया जहाँ लिखा है: 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बन्दियों की स्वतन्त्रता और अंधों की दृष्टि की बहाली का प्रचार करने, शोषितों को छुड़ाने, और यहोवा के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने के लिये भेजा है।' तब उस ने पुस्तक को लुढ़काकर सेवक को लौटा दिया और बैठ गया।

उनके दृष्टान्त

किसी ने कहा है कि दृष्टान्त एक सांसारिक कहानी है जिसका एक स्वर्गीय अर्थ है। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु की कई शिक्षाएँ दृष्टान्तों में की गई थीं। हो सकता है कि जो यहूदी ईश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे थे, वे इन दृष्टान्तों में से कई को समझ सकें, जबकि धार्मिक नेता जिनके दिल पद, शक्ति, प्रतिष्ठा और धन से अधिक चिंतित थे, उनका अर्थ नहीं समझ सके।

उनके चमत्कार

चमत्कार का उद्देश्य क्या था? क्या यीशु अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा था, चाहता था कि उसके देशवासी उसे अपना राजा बनायें या अभिषिक्त को भेजने के लिए परमेश्वर के वादे को पूरा कर रहे थे?

अक्सर बड़ी भीड़ यीशु का पीछा करती थी, शायद जिज्ञासा से, यह देखने की कोशिश कर रही थी कि "इसमें मेरे लिए क्या है?" या राजनीतिक सत्ता की इच्छा के साथ अगर वह राजा बनना था। कुछ लोगों ने माना होगा कि वह मसीहा हो सकता है। उसके चमत्कारों के गवाहों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है:

चमत्कार के प्राप्तकर्ता

निश्चय ही सब आनन्द और आनन्द से भरे हुए थे और परमेश्वर की बड़ाई करते थे। एक उल्लेखनीय अपवाद दस कोढ़ियों का शुद्धिकरण था, जिनमें से नौ परमेश्वर की महिमा करने के लिए वापस नहीं लौटे।

चमत्कार के साक्षी

गवाहों ने न केवल चमत्कार देखा; उन्होंने यह देखते हुए मनुष्य की सीमाओं को पहचाना कि केवल परमेश्वर की शक्ति के द्वारा ही ऐसे चमत्कार किए जा सकते हैं। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और उसकी महिमा की।

धार्मिक नेता

धार्मिक नेताओं को आमतौर पर शास्त्री और फरीसी के रूप में जाना जाता था। उनके पास धन, शक्ति, प्रतिष्ठा और पुरुषों की प्रशंसा थी। उनका मानना था कि यीशु उनके राष्ट्र, उनकी स्थिति और शक्ति को नष्ट करने जा रहे थे। नतीजतन, उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह ऊपर से था या उसके द्वारा किए गए चमत्कारों में से कोई भी भगवान से था। उन्होंने उन्हें शैतान की शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया। वे उसे मारना चाहते थे, लेकिन उन लोगों से डरते थे जो मानते थे कि वह परमेश्वर की ओर से है। अंत में, उन्होंने अपनी कई परंपराओं और कानूनों का उल्लंघन किया, (सब्त के दिन मुकदमा, झूठे गवाहों की तलाश, उसे पकड़ने के लिए पैसे का भुगतान करना, लेकिन वापस लौटने पर यह स्वीकार करते हुए कि यह "रक्त का पैसा" था) मना कर दिया। अंत में, उन्होंने कहा, "उसे क्रूस पर से उतरने दो और हम उस पर विश्वास करेंगे"।

उसके दुश्मन

धर्मग्रंथ उन लोगों की पहचान करते हैं जो उनके सांसारिक मंत्रालय के दौरान मसीह का विरोध करते थे और उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद उनके चर्च का विरोध करते थे।

हेरोदेस (महान)

“वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा पैदा हुआ है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी पूजा करने आए हैं।" ... जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह परेशान हो गया ... उसने उन्हें बेथलहम भेज दिया और कहा, "जाओ और बच्चे की सावधानीपूर्वक खोज करो। जैसे ही तुम उसे पाओ, मुझे रिपोर्ट करना, ताकि मैं भी जाकर उसकी पूजा कर सकूं।" ... जब हेरोदेस को पता चला कि उसे जादूगरनी ने चकमा दे दिया है, तो वह क्रोधित हो गया, और उसने बेथलहम और उसके आसपास के सभी लड़कों को मारने का आदेश दिया, जो दो साल या उससे कम उम्र के थे, उस समय के अनुसार जो उसने सीखा था। मागी (मत्ती 2:2-3; 8, 16 एनआईवी)।

शैतान (शैतान)

तब यीशु को आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान की परीक्षा हो। चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा था। परीक्षा देने वाला उसके पास आया और कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है," ... फिर से, शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। "यह सब मैं तुम्हें दूंगा," उसने कहा, "यदि आप झुकेंगे और मेरी पूजा करेंगे"। यीशु ने उससे कहा, “हे शैतान, मुझ से दूर हो! क्योंकि लिखा है: 'अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, और केवल उसी की उपासना करो'।" तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गदूत उसके पास आए (मत्ती 4:1-3; 8-11)।

नाज़रेथ के नागरिक(गृहनगर लोग)

जब यीशु इन दृष्टान्तों को पूरा कर चुका, तब वह वहां से चला गया। जब वह अपने देश में आया, तो उनकी आराधनालय में उन्हें उपदेश दिया, कि वे चकित होकर कहने लगे, 'इस मनुष्य को यह ज्ञान और ये शक्तिशाली कार्य कहाँ से मिले? क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसकी माता मरियम नहीं कहलाती? और उसके भाई याकूब, योसेस, शमौन और यहूदा? और उसकी बहनों, क्या वे सब हमारे साथ नहीं हैं? फिर इस आदमी को ये सब चीज़ें कहाँ से मिलीं?' इसलिए, वे उस पर नाराज थे (मत्ती 13:53-57 एनकेजेवी)।

यहूदा इस्करियोती(प्रेरितों में से एक)

तब बारहों में से एक, जो यहूदा इस्करियोती कहलाता है, महायाजकों के पास गया, और कहा, यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ में कर दूं, तो तुम मुझे क्या देना चाहते हो? और उन्होंने उसके लिथे चान्दी के तीस टुकड़े गिने। इसलिए, उस समय से उसने अपने साथ विश्वासघात करने का अवसर मांगा (मत्ती 26:14-16 26:3-4 एनकेजेवी)।

फरीसी, मुख्य याजक, प्राचीन, शास्त्री और परिषद

जब वे बाहर निकले, तो क्या देखा, कि वे गूंगा और दुष्टात्माओं से ग्रस्त एक मनुष्य को उसके पास ले आए। और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोला। और भीड़ ने अचम्भा किया, और कहा, इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया था! ... परन्तु फरीसियों ने कहा, "वह दुष्टात्माओं के सरदार के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है"। ... देखो, एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। और उन्होंने उस से पूछा, क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है? - ताकि वे उस पर दोष लगा सकें। तब उस ने उन से कहा, तुम में ऐसा कौन मनुष्य है, जिसके पास एक भेड़ हो, और यदि वह सब्त के दिन किसी गड़हे में गिर जाए, तो उसे पकड़कर न निकाले? भेड़ की तुलना में? इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।” तब उस ने उस पुरूष से कहा, अपना हाथ बढ़ा। और उस ने उसे बढ़ाया, और वह दूसरे के समान चंगा हो गया। तब फरीसियों ने निकलकर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, कि उसे किस रीति से नाश करें। ... अब जब महायाजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टान्तों को सुना, तो उन्होंने जान लिया कि वह उन्हीं की बात कर रहा है। परन्तु जब उन्होंने उस पर हाथ रखना चाहा, तो वे भीड़ से डरते थे, क्योंकि उन्होंने उसे भविष्यद्वक्ता के रूप में लिया था (मत्ती 9:32-34; 12:10-14; 21:45-46 एनकेजेवी)।

तब यीशु ने भीड़ और अपने चेलों से कहा, “शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिथे जो कुछ वे तुझ से कहने को कहें, कि मानना, और करना, परन्तु उनके कामोंके अनुसार न करना; क्योंकि वे कहते हैं, और करते नहीं"... "परन्तु, हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! क्योंकि तू ने स्वर्ग के राज्य को मनुष्यों के साम्हने बन्द कर रखा है; क्योंकि न तो तुम अपके भीतर जाते हो, और न आनेवालोंको भीतर जाने देते हो।" ... तब महायाजक, शास्त्री, और प्रजा के पुरनिये महायाजक के भवन में जो कैफा कहलाता था, इकट्ठे

हुए। , और यीशु को छल से लेने और उसे मारने की साज़िश रची (मत्ती 23:1-3; 13-14 एनकेजेवी)।

और जिन लोगों ने यीशु को पकड़ लिया था, वे उसे महायाजक कैफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिये इकट्ठे हुए थे। परन्तु पतरस उसके पीछे पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया। और वह भीतर जाकर अन्त देखने को सेवकोंके संग बैठ गया। अब महायाजकों, पुरनियों, और सारी सभा ने यीशु को मार डालने के लिथे उसके विरुद्ध झूठी गवाही चाही, परन्तु कोई न मिला। भले ही बहुत से झूठे गवाह सामने आए, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला (मत्ती 26:57-60 एनकेजेवी)।

प्रशन

1. वे चमत्कार जो यीशु ने गुप्त रूप से किए।

टी. _____ एफ. _____

2. यीशु के शत्रु कौन थे?

एक। _____ आम आदमी

बी। _____ धार्मिक नेता

3. यहूदी धर्मगुरुओं ने विश्वास करने से इनकार कर दिया क्योंकि

एक। ____ उन्होंने उसके द्वारा किए गए किसी भी चमत्कार को नहीं देखा

बी। ____ वे पद और प्रतिष्ठा में अधिक रुचि रखते थे

सी। ____ यीशु ने उन्हें उनकी पापी दशा के बारे में कभी नहीं बताया

4. इसियाह ने भविष्यवाणी की थी कि यीशु था

एक। ___गरीबों को सुसमाचार का प्रचार करें

बी। ___बंदियों के लिए आजादी की घोषणा

सी। ___अंधों के लिए दृष्टि ठीक करना

डी। ___उत्पीड़ितों को रिहा करो

ई ___ प्रभु के वर्ष की घोषणा करें

एफ। ___ सब से ऊपर

जी ___ ए, बी और सी

5. शैतान ने यीशु की परीक्षा ली bपरन्तु यीशु अपनी परीक्षा के आगे न झुके।

टी. _____ एफ. _____

पाप-बलि - यीशु का प्रायश्चित बलिदान

पाठ 5

गिरफ़्तार करना

यीशु ने महायाजकों, और मन्दिर के पहरेदारों, और पुरनियों से, जो उसके लिथे आए थे, कहा, क्या मैं विद्रोह कर रहा हूं, कि तुम तलवारें और लाठियां लिए आए हो? मैं प्रति दिन मन्दिर के आंगनों में तेरे संग रहा करता, और तू ने मुझ पर हाथ न लगाया। लेकिन यह तुम्हारी घड़ी है-जब अंधेरा राज करता है।' तब वे उसे पकड़कर ले गए और महायाजक के घर में ले गए (लूका 22:52-54)।

यहूदी नकली परीक्षण

जो लोग यीशु की रखवाली कर रहे थे, वे उसका मज़ाक उड़ाने और उसकी पिटाई करने लगे। उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी और माँग की, “भविष्यद्वाणी! किसने आपको टक्कर मारी?" और उन्होंने और भी बहुत सी अपमानजनक बातें उस से कही। भोर के समय लोगों के पुरनियों की महासभा, दोनों महायाजक और कानून के शिक्षक, एक साथ मिले, और यीशु उनके सामने ले जाया गया। "यदि आप मसीह हैं," उन्होंने कहा, "हमें बताओ।" यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं तुम से कहूं, तो तुम मेरी प्रतीति न करोगे, और यदि मैं तुम से पूछूं, तो तुम उत्तर न दोगे। परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र पराक्रमी परमेश्वर के दाहिने विराजमान होगा।” सबने पूछा, “तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?” उन्होंने उत्तर दिया, "मैं कह रहा हूं कि आप सही हैं।" तब उन्होंने कहा, 'हमें और गवाही की क्या आवश्यकता है? हम ने यह उसके ही होठों से सुना है" (लूका 22:63-71)।

रोमन परीक्षण

पीलातुस फिर महल के भीतर गया, और यीशु को बुलवाकर पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? "क्या यह आपका अपना विचार है," यीशु ने पूछा, "या दूसरों ने आपसे मेरे बारे में बात की?" "क्या मैं एक यहूदी हूँ?" पिलातुस ने उत्तर दिया। “तेरी प्रजा और महायाजकों ने तुझे मेरे वश में कर दिया। तुमने क्या किया है?” यीशु ने कहा, “मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए संघर्ष करते। परन्तु अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है।” "तो फिर तुम राजा हो!" पिलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया, “तुम ठीक कह रहे हो कि मैं राजा हूँ। वास्तव में मेरा जन्म इसी कारण से हुआ है, और मैं जगत में इसलिये आया हूं, कि सत्य की गवाही दूं। सच्चाई के पक्ष में हर कोई मेरी सुनता है" (यूहन्ना 18:33-37)

पीलातुस ने महायाजकों, हाकिमों और प्रजा के लोगों को बुलवाकर कहा, “तुम इस मनुष्य को मेरे पास ले आए, जो प्रजा को बलवा करने के लिए उकसाता था। मैंने आपकी उपस्थिति में उसकी जांच की है और उसके विरुद्ध आपके आरोपों का कोई आधार नहीं पाया है। हेरोदेस के पास भी नहीं, क्योंकि उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है; जैसा कि आप देख सकते हैं, उसने मौत के लायक कुछ भी नहीं किया है। इसलिए, मैं उसे दण्ड दूंगा और फिर उसे छोड़ दूंगा।” वे एक स्वर में चिल्ला उठे, “इस आदमी को दूर करो! बरअब्बा को हमारे लिये छोड़ दो!” (बरअब्बा को नगर में विद्रोह, और हत्या के कारण कारागार में डाल दिया गया था।) यीशु को रिहा करना चाहते थे, पीलातुस ने उनसे फिर से अपील की। परन्तु वे चिल्लाते रहे, “उसे क्रूस पर चढ़ा! उसे सूली पर चढ़ा दो!" तीसरी बार उसने उनसे कहा: “क्यों? इस आदमी ने क्या अपराध किया है? मैंने उसमें मृत्युदंड के लिए कोई आधार नहीं पाया है। इसलिए,

जब पीलातुस न्यायी के आसन पर बैठा था, तब उसकी पत्नी ने उसे यह सन्देश भेजा: "उस निर्दोष मनुष्य से कुछ न लेना, क्योंकि उसके कारण मैं ने आज स्वप्न में बहुत दुख उठाया है" (मत्ती 27:19) .

भीड़ को संतुष्ट करने के लिए पीलातुस ने बरअब्बा को उनके लिए रिहा कर दिया। उसने यीशु को कोड़े मारे, और उसे सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया (मरकुस 15:15)।

सूली पर चढ़ाया

सिपाहियों ने यीशु को महल (यानी प्रेटोरियम) में ले जाया और सैनिकों की पूरी टीम को एक साथ बुलाया। उन्होंने उस पर बैंजनी वस्त्र पहिनाया, और कांटों का मुकुट गूंथकर उस पर लगाया। और वे उसे पुकारने लगे, "यहूदियों के राजा, जय हो!" वे बार-बार लाठी से उसके सिर पर वार करते और उस पर थूकते थे। उन्होंने घुटनों के बल गिरकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। और जब उन्होंने उसका ठट्ठा किया, तब उन्होंने बैंजनी चोगा उतार दिया, और उसी के वस्त्र उस पर पहिना दिए। तब वे उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए (मरकुस 15:15-20)।

वे गोलगोथा (जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान) नामक स्थान पर आए। वहाँ उन्होंने यीशु को पित्त मिला हुआ दाखमधु पिलाया; लेकिन उसे चखने के बाद उसने पीने से इनकार कर दिया। जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया, तो चिट्ठी डालकर उसके कपड़े बांट दिए। और वे बैठे बैठे उस पर पहरा देते रहे। उन्होंने उसके सिर के ऊपर लिखित आरोप लगाया: यह यीशु, यहूदियों का राजा है (मत्ती 27:33-37)।

यह तीसरा घंटा [9:00 पूर्वाह्न] था जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया। उसके खिलाफ आरोप की लिखित सूचना पढ़ी गई: यहूदियों का राजा (मरकुस 15:25-27)।

छठवें पहर [दोपहर] के नौवें पहर तक सारे देश में अन्धकार छा गया। और नौवें घंटे में यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारा, "एलोई, एलोई, लमा शबक्तनी?" - जिसका अर्थ है, मेरे भगवान, मेरे भगवान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया (मरकुस 15:33-34)?

यह सुनकर पास खड़े लोगों में से कितनों ने कहा, सुन, वह एलिय्याह को पुकार रहा है। एक आदमी दौड़ा, एक स्पंज में दाखमधु के सिरके से भरकर एक डंडी पर रखा, और उसे पीने के लिए यीशु को दिया। "अब उसे अकेला छोड़ दो। देखते हैं कि क्या एलिय्याह उसे नीचे उतारने के लिए आता है, "उसने कहा। जोर से रोने के साथ, यीशु ने अंतिम सांस ली। मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। और जब उस सूबेदार ने, जो यीशु के साम्हने खड़ा था, उसकी दोहाई सुनी और देखा कि वह कैसे मरा, तो उसने कहा, निश्चय यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था (मरकुस 15:35-39)!

वह तैयारी का दिन था (अर्थात सब्त से एक दिन पहले)। सो जैसे ही संध्या हुई, अरिमथिया का यूसुफ, जो परिषद का एक प्रमुख सदस्य था, जो स्वयं परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था, निडरता से पीलातुस के पास गया और यीशु के शरीर के लिए कहा। पीलातुस यह सुनकर चकित रह गया कि वह पहले ही मर चुका है। सूबेदार को बुलाकर उसने उससे पूछा कि क्या यीशु पहले ही मर चुका है। जब उस ने सूबेदार से जान लिया कि ऐसा ही है, तो उस ने उसकी लोय यूसुफ को दे दी। तब यूसुफ ने सन का कुछ कपड़ा मोल लिया, और लोथ को उतारकर उस सनी में लपेटा, और चट्टान की तराशी हुई कब्र में रखा। फिर उसने कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़काया (मरकुस 15:42-46)।

जी उठने

सब्त के बाद, सप्ताह के पहले दिन भोर में, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने गई। एक भयंकर भूकम्प हुआ, क्योंकि यहोवा का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और कब्र पर जाकर पत्थर को लुढ़काकर उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली की तरह था, और उसके कपड़े बर्फ की तरह सफेद थे। पहरेदार उससे इतना डरते थे कि वे काँपते थे और मरे हुए लोगों की तरह हो जाते थे। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम यीशु को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ रही हो। वह यहां नहीं है; जैसा उस ने कहा, वह जी उठा है" (मत्ती 28:1-6)।

सप्ताह के उस पहिले दिन की सांझ को जब चेले यहूदियों के डर से द्वार बन्द किए हुए थे, तब यीशु आया, और उनके बीच खड़ा हो गया, और कहा, तुझे शान्ति मिले! इतना कहने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और बाजू दिखाए। प्रभु को देखकर शिष्य बहुत प्रसन्न हुए। यीशु ने फिर कहा, “तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेज रहा हूँ।” और उस ने उन पर फूंक मारी और कहा, "पवित्र आत्मा प्राप्त करो" (यूहन्ना 20:19-22)।

एक सप्ताह बाद उसके चेले फिर घर में थे, और थोमा उनके साथ था। हालाँकि दरवाजे बंद थे, फिर भी यीशु आया और उनके बीच खड़ा हो गया और कहा, "तुम्हें शांति मिले!" तब उसने थोमा से कहा, “अपनी उँगली यहाँ रख; मेरे हाथ देखो। अपना हाथ बढ़ा कर मेरी बाजू में रख दो। संदेह करना बंद करो और विश्वास करो। ” थोमा ने उससे कहा, "हे मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर" (यूहन्ना 20:26-28)!

<u>अधिरोहण</u>

अपनी पिछली किताब, थिओफिलस में, मैंने उन सभी के बारे में लिखा था जो यीशु ने करना शुरू किया और उस दिन तक सिखाया जब तक कि उन्हें स्वर्ग में नहीं ले जाया गया, पवित्र आत्मा के माध्यम से प्रेरितों को निर्देश देने के बाद उन्हें चुना गया। अपनी पीड़ा के बाद, उसने खुद को इन लोगों को दिखाया और कई पुख्ता सबूत दिए कि वह जीवित था। वह चालीस दिनों की अवधि में उनके सामने प्रकट हुआ और परमेश्वर के राज्य के बारे में बोला। एक अवसर पर, जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था, उसने उन्हें यह आज्ञा दी: “यरूशलेम को मत छोड़ो, परन्तु उस भेंट की बाट जोहते रहो, जिसका वचन मेरे पिता ने दिया है, जिसके विषय में तुम ने मुझे बोलते सुना है। क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु थोड़े ही दिनों में तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।” सो जब वे इकट्ठे हुए, तो उस से पूछा, हे यहोवा, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देने वाला है? उसने उनसे कहा: “पिता ने अपने अधिकार से जो समय या तारीखें निर्धारित की हैं, उन्हें जानना आपके लिए नहीं है। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।” यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। "गलील के लोगों," उन्होंने कहा, "तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुम से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से लौटेगा जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:1-11)। और पृथ्वी की छोर तक।” यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। "गलील के लोगों," उन्होंने कहा, "तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुम से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से लौटेगा जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:1-11)। और पृथ्वी की छोर तक।” यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। "गलील के लोगों," उन्होंने कहा, "तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुम से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से लौटेगा जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:1-11)।

प्रशन

1. जीसस को सूली पर चढ़ाने की जिम्मेदारी के आरोप में रोमी सैनिकों ने कहा।

एक। ____ वे यहूदी कब सीखेंगे कि वे हमें हरा नहीं सकते?

b.____इस आदमी ने कुछ भयानक किया होगा क्योंकि उसके धार्मिक नेता चाहते हैं कि उसे सूली पर चढ़ाया जाए।

सी। _____निश्चित रूप से यह आदमी परमेश्वर का पुत्र थ ा

डी। _____एक और विद्रोही ने कठिन तरीके से सीख ा

2. कोई रिकॉर्ड नहीं है कि यीशु को दफनाया गया था।

टी. _____ एफ. _____

3. यीशु की मृत्यु और एक संरक्षित कब्र में दफनाने के बाद सब्त के बाद की सुबह थी

एक। _____भूकंप जब पत्थर लुढ़क गया

बी। _____प्रभु का एक दूत पृथ्वी पर आया

सी। _____मकबरे की रखवाली करने वाले मरे हुए आदमी बन गए

डी। _____ यीशु को फिर से जीवित किया गया, पुनर्जीवित किया गया

इ। _____सब से ऊपर

4. अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु को किसके द्वारा देखा गया था

एक। _____ उनके प्रेरित

बी। _____ कुछ और अविश्वसनीय लोग

सी। _____ सैकड़ों लोगों की

डी। _____ ए और सी

5. किसी ने यीशु को उसके पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग जाते हुए नहीं देखा। यह उनके शिष्यों द्वारा अपने निजी लाभ के लिए बनाई गई एक चतुर कहानी है।

टी. _____ एफ. _____

संकट और चेतावनी

पाठ 6

<u>मसीह विरोधी के लिए</u> (जो लोग मसीह को नकारते हैं, वे परमेश्वर हैं)

इस प्रकार आप परमेश्वर के आत्मा को पहचान सकते हैं: प्रत्येक आत्मा जो स्वीकार करती है कि यीशु मसीह शरीर में आया है, वह परमेश्वर की ओर से है, परन्तु प्रत्येक आत्मा जो यीशु को स्वीकार नहीं करती है, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में आपने सुना है कि आ रही है और अब भी दुनिया में है (1 यूहन्ना 4:2-3 एनआईवी)।

बहुत से धोखेबाज, जो यीशु मसीह को शरीर में आने के रूप में स्वीकार नहीं करते, दुनिया में निकल गए हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति धोखेबाज और मसीह विरोधी है (2 यूहन्ना 7 एनआईवी)।

संकरे गेट से प्रवेश करें। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुतेरे उस से प्रवेश करते हैं। परन्तु छोटा है वह फाटक और सँकरा वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है, और थोड़े ही उसे पाते हैं (मत्ती 7:13-14)।

सो हर बात में दूसरों के साथ वही करो जो तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें, क्योंकि यह व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का सार है (मत्ती 7:12)।

ईसाइयों के लिए

हे भाइयों, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से बिनती करता हूं, कि तुम सब एक दूसरे से सहमत हो जाओ, कि तुम में फूट न हो, और तुम मन और विचार में एक हो जाओ। (1 कुरिन्थियों 1:10)

झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहें। वे भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे क्रूर भेड़िये हैं। उनके फल से तुम उन्हें पहचान लोगे (मत्ती 7:15-16)।

हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि उन लोगों से सावधान रहो जो फूट डालते हैं और तुम्हारे मार्ग में बाधा डालते हैं जो तुम्हारे द्वारा सीखी गई शिक्षा के विपरीत हैं। इनसे दूर रहें। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने ही भूखों की सेवा करते हैं। चिकनी-चुपड़ी बातें और चापलूसी से, वे भोले लोगों के मन को धोखा देते हैं (रोमियों 16:17-18)।

अपनी और उस सारी झुण्ड की रखवाली करो, जिसका पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है। परमेश्वर की कलीसिया के चरवाहे बनो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। मुझे पता है कि मेरे जाने के बाद, जंगली भेड़िये तुम्हारे बीच आएंगे और झुंड को नहीं छोड़ेंगे। यहां तक कि आपके अपने नंबर से भी लोग उठेंगे और शिष्यों को अपने पीछे खींचने के लिए सच्चाई को विकृत कर देंगे। तो अपने पहरे पर रहो! स्मरण रहे कि तीन वर्ष तक मैं ने तुम में से प्रत्येक को रात-दिन आंसुओं के साथ चेतावनी देना बंद नहीं किया (प्रेरितों के काम 20:28-31)।

जो कोई इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी के वचनों को सुनता है, मैं उन सभों को चेतावनी देता हूं, कि यदि कोई उन में कुछ और बढ़ाए, तो परमेश्वर इस पुस्तक में वर्णित विपत्तियों को उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक से वचन दूर करे, तो परमेश्वर उस से जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में उसका भाग छीन लेगा, जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

कुल्हाड़ा तो पेड़ों की जड़ में है, और जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंक दिया जाएगा (मत्ती 3:10)।

क्योंकि पापी प्रकृति वह चाहती है जो आत्मा के विपरीत है, और आत्मा जो पापी स्वभाव के विपरीत है। वे एक-दूसरे के साथ संघर्ष में हैं, ताकि आप वह न करें जो आप चाहते हैं। परन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा चलाए जाते हो, तो तुम व्यवस्था के अधीन नहीं हो (गलातियों 5:17-18)।

पापी प्रकृति के कार्य स्पष्ट हैं: यौन अनैतिकता, अशुद्धता और व्यभिचार; मूर्तिपूजा और जादू टोना; घृणा, कलह, ईर्ष्या, क्रोध के दौरे, स्वार्थी महत्वाकांक्षा, मतभेद, गुट और ईर्ष्या; नशे, orgies, और इस तरह। जैसा मैं ने पहिले किया, वैसा ही मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं, कि जो लोग इस प्रकार जीते हैं वे परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे (गलातियों 5:19-21)।

कोई अशुद्ध वस्तु उस में कभी प्रवेश न करेगी, और न कोई जो लज्जाजनक या छल का काम करेगा, केवल वे ही जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं (प्रकाशितवाक्य 21:26-27)।

धन पर निर्भर लोगों के लिए

"परन्तु तुम पर हाय, जो धनी हैं, क्योंकि तुम ने शान्ति पा ली है। हाय तुम पर, जो अब पेट भरे हुए हैं, क्योंकि तुम भूखे रहोगे। हाय तुम पर जो अब हंसते हैं, क्योंकि तुम शोक और रोओगे। धिक्कार है तुम पर जब सब लोग तेरे विषय में अच्छा बोलते हैं, क्योंकि उनके पुरखा झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ ऐसा ही करते थे (लूका 6:24-26)।

धार्मिक नेताओं के लिए

तुम पर धिक्कार है, अंधे मार्गदर्शक! तुम कहते हो, 'यदि कोई मन्दिर की शपय खाए, तो उसका कोई अर्थ नहीं; परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपय खाए, तो वह अपक्की शपय से बंधा हुआ है।' तुम अंधे मूर्खों! कौन सा बड़ा है: सोना, या मंदिर जो सोने को पवित्र बनाता है? तुम यह भी कहते हो, 'यदि कोई वेदी की शपय खाए, तो उसका कोई अर्थ नहीं; परन्तु यदि कोई उस भेंट की शपथ खाए, तो वह अपक्की शपय से बंधा हुआ है।' तुम अंधे आदमी! कौन सा बड़ा है: उपहार, या वेदी जो उपहार को पवित्र बनाती है? इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उस की और उस की सब वस्तुओं की भी शपथ खाता है। और जो मन्दिर की शपय खाता है, वह उसकी और उस में रहनेवाले की भी शपय खाता है। और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है (मत्ती 23:16-22)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! आप एक परिवर्तित व्यक्ति को जीतने के लिए भूमि और समुद्र में यात्रा करते हैं, और जब वह एक हो जाता है, तो आप उसे अपने से दुगना नरक का पुत्र बना देते हैं (मत्ती 23:15)।

"हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम प्याले और थाली को बाहर से साफ करते हो, परन्तु भीतर से वे लोभ और भोग से भरे होते हैं (मत्ती 23:25)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! आपने स्वर्ग के राज्य को मनुष्यों के सामने बंद कर दिया। तुम आप ही प्रवेश नहीं करते, और न उन्हें प्रवेश करने देते हो जो कोशिश करते हैं (मत्ती 23:13)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! आप अपने मसालों का दसवां हिस्सा दें - पुदीना, सोआ और जीरा। लेकिन आपने कानून के अधिक महत्वपूर्ण मामलों - न्याय, दया और विश्वास की उपेक्षा की है। आपको पूर्व की उपेक्षा किए बिना, बाद वाले का अभ्यास करना चाहिए था। आप अंधे मार्गदर्शक! तुम मच्छर को तो छानते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो (मत्ती 23:23-24)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम सफेदी की हुई कब्रों के समान हो, जो बाहर से तो सुंदर दिखती हैं, पर भीतर से मरे हुए आदमियों की हड्डियों और सब कुछ अशुद्ध से भरी हुई हैं। उसी तरह, बाहर से तुम लोगों को धर्मी लगते हो, परन्तु भीतर से तुम कपट और दुष्टता से भरे हुए हो (मत्ती 23:27-28)।

प्रशन

1. मसीह विरोधी कौन हैं?

एक। ____शैतान और उसके दूत

बी। ____ ईसाई जो दुनिया में लौट आए

सी। ____ जो इस बात से इनकार करते हैं कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है

डी। ____ स्पिरिट्स

2. ईसाइयों के लिए गैर-ईसाइयों के साथ कम सम्मान के साथ व्यवहार करना स्वीकार्य है,

टी. _____ एफ. _____

3. कुछ लोग, यहाँ तक कि वे जो ई-ईसाईयों को मानते हैं, जानबूझकर सुसमाचार और प्रेरितों की शिक्षाओं के विपरीत शिक्षा देंगे।

टी. _____ एफ. _____

4. निम्नलिखित में से कौन पापी हैं?

एक।____ यौन अनैतिकता

बी।____ अशुद्धता और व्यभिचार

सी।____ मूर्तिपूजा और जादू टोना

डी।____ घृणा

इ।____ कलह

एफ।____ डाह करना

जी।____ क्रोध के फिट बैठता है

एच।____ स्वार्थी महत्वाकांक्षा

मैं।____ मतभेद

जे।____ कार्य और ईर्ष्या

एल____ शराबीपन

एम।____संगठन

एन।____ सब से ऊपर

5. जो परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को मानते हैं, परन्तु दया या न्याय नहीं दिखाते, वे धर्मी हैं।
टी. _____ एफ. _____

उनका संदेश

पाठ 7

शुरुआत में और पांच दिनों के लिए भगवान ने सब कुछ अस्तित्व में बताया और निष्कर्ष निकाला कि यह अच्छा था। छठे दिन "परमेश्वर ने कहा, "आओ, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं" (उत्पत्ति 1:26)। इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्य, नर और नारी को उस भूमि से उत्पन्न किया, जो पहले से अस्तित्व में थी। मनुष्य परमेश्वर से बात करने में भी सक्षम था। मनुष्य को निर्देश दिया गया

था कि वह उस स्थान की देखभाल करे जहां परमेश्वर ने उसे पृथ्वी पर रखा था। मनुष्य से कहा गया था कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए।

लेकिन मनुष्य ने स्वयं को परमेश्वर से अलग कर लिया जब उसने केवल एक चीज की अवज्ञा करके विद्रोह किया जिसे परमेश्वर ने उसे नहीं करने के लिए कहा था। यह पाप शारीरिक मृत्यु लेकर आया और जब तक मनुष्य किसी तरह से परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप नहीं कर पाता, वह भी आध्यात्मिक मृत्यु। इस सुलह के लिए एक रक्त बलिदान की आवश्यकता होगी। केवल "यह अनहोना है कि बैल और बकरियों का लोहू पापों को दूर करे" (इब्रानियों 10:4) के लिए कोई बलिदान नहीं।

इसके लिए किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होगी जिसके पास कोई पाप न हो, वह पूर्ण बलिदान हो। "तुम देखते हो, ठीक समय पर, जब हम शक्तिहीन थे, तो मसीह अधर्मियों के लिए मर गया" (रोमियों 5:7)।

तीन प्रेरितों, पौलुस, पतरस और यूहन्ना ने मसीह की पापरहितता और संसार के पापों को दूर करने के बलिदान के बारे में लिखा। "हम मसीह की ओर से आपसे विनती करते हैं: भगवान से मेल मिलाप करें। जिस में कोई पाप नहीं था, उसे परमेश्वर ने हमारे लिये पापी ठहराया, कि उस में हम परमेश्वर की धार्मिकता ठहरें।" (2 कुरिन्थियों 5:20-21) "मसीह ने तुम्हारे लिए दुख उठाया, और तुम्हारे लिए एक आदर्श छोड़ दिया, कि तुम उसके चरणों में चलो। उस ने कोई पाप नहीं किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली" (1 पतरस 2:21-22)। "पर तुम जानते हो, कि वह हमारे पापों को दूर करने के लिथे प्रकट हुआ। और उस में कोई पाप नहीं" (1 यूहन्ना 3:5)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था "जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज, 'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो, उसके लिए सीधे मार्ग बनाओ'" (मत्ती 3:3)। उसने कहा, "मैं तुम्हें मन फिराव के लिये जल से बपतिस्मा देता हूं। परन्तु मेरे बाद एक ऐसा आएगा जो मुझ से अधिक सामर्थी है, जिसकी जूती उठाने के योग्य मैं नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका जीतने वाला कांटा अंदर है। अपना हाथ, और वह अपने खलिहान को साफ करेगा, अपने गेहूं को खलिहान में इकट्ठा करेगा, और भूसी को आग से जला देगा" (मत्ती 3:11-12)।

सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए यूहन्ना द्वारा अपने बपतिस्मा के बाद और शैतान द्वारा उसके सामने रखे गए प्रलोभनों पर काबू पाने के बाद, यीशु गलील लौट आया और फिर नासरत चला गया। उस ने उनके आराधनालय में एक पुस्तक ली, और उसे खोलकर वह स्थान पाया, जहां लिखा है, कि यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उस ने कंगालोंको सुसमाचार सुनाने के लिथे मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बन्दियों की स्वतन्त्रता और अंधों की दृष्टि की बहाली का प्रचार करने, शोषितों को छुड़ाने, और यहोवा के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने के लिये भेजा है।' तब उस ने पुस्तक को लुढ़काकर सेवक को लौटा दिया और बैठ गया। आराधनालय में सबकी निगाहें उस पर लगी रहीं, और वह उन से कहने लगा, 'आज यह वचन तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ' (लूका 4:17-21)।

तो यह "गरीबों के लिए खुशखबरी" क्या है जिसका उसने प्रचार किया? यह था और अब भी है - भगवान अन्य सभी मनुष्यों की तरह मांस और रक्त बन गए। वह स्त्री से पैदा हुआ था, लेकिन पवित्र आत्मा के एक कार्य द्वारा गर्भ धारण किया था, पुरुष द्वारा नहीं। "वह बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया" और कहा, "मुझे अपने पिता का काम होना चाहिए" (लूका 2:49 NKJV और लूका 2:52 NIV) पिता का काम सभी पुरुषों को लाना था पाप के दुनिया में प्रवेश करने से पहले उनके साथ एक धर्मी संबंध में वापस। ऐसा करने के लिए एक पूर्ण बलिदान किया जाना चाहिए और मनुष्य को आत्म-खोज और विद्रोह के जीवन से उस व्यक्ति में विश्वास, आज्ञाकारिता और श्रद्धा में बदलना चाहिए जो अपने पापों को क्षमा कर सकता है और अनंत जीवन दे सकता है। यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6-7)। यीशु उनके पास आया और कहा, " स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उसका पालन करना सिखाओ। और मैं युग के अन्त तक सदा तेरे संग रहूंगा" (मत्ती 28:18-20)। इन सबका प्रमाण भविष्यवाणियों की पूर्ति, शत्रुओं द्वारा देखे गए चमत्कार और स्वीकृति और अंततः उनकी सार्वजनिक मृत्यु और दफन और उनके सैकड़ों शिष्यों द्वारा उनके पुनरुत्थान में देखा गया था।

चूँकि वह मार्ग, सत्य और जीवन है, और स्वर्ग और पृथ्वी पर उसका सारा अधिकार है, और उसके बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता है, तो हमें अपने पापों को क्षमा करने की आवश्यकता है, मेल-मिलाप करना, और बचाया? या जैसा कि पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों ने कहा था, "जब लोगों ने यह सुना, तो उनका मन कट गया और उन्होंने पतरस और दूसरे प्रेरितों से कहा, हे भाइयो, हम क्या करें" (प्रेरितों के काम 2:37)?

सुनना

- लगन से अध्ययन करो और पढ़ो कि मसीह ने क्या उपदेश दिया क्योंकि वे जीवन के वचन हैं।

समझना

- परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके सभी मनुष्य पापी हैं
- मैंने पाप किया है और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार नहीं जी रहा हूँ
- मेरे पाप का परिणाम मेरी अनन्त मृत्यु में होगा
- मुझे परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन पाने के लिए क्षमा किया जाना चाहिए
- मेरे लिए मेरे सभी पापों को क्षमा करने का एकमात्र तरीका मसीह है

यीशु पर विश्वास करें

- भगवान था और है
- नासरत के यीशु के रूप में मांस में पृथ्वी पर आया
- पुरुषों के बीच रहता था
- स्वेच्छा से अपने भौतिक जीवन को मेरे पापों के लिए पूर्ण बलिदान के रूप में दे दिया, क्रूस पर चढ़ाया गया
- दफनाया गया
- तीसरे दिन कब्र से गुलाब
- उनके पुनरुत्थान के बाद उनके सैकड़ों शिष्यों को दिखाई दिए
- पिता के साथ रहने के लिए वापस स्वर्ग में चढ़े

मन फिराओ

- मेरे जीवन को पाप और अवज्ञा से विश्वास और आज्ञाकारिता में बदलें

अपराध स्वीकार करना

- सार्वजनिक रूप से मेरे विश्वास को स्वीकार करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

मरना

- मेरे पुराने, पापी, सांसारिक जीवन को मार डालो

पाना

- मेरे पापों को क्षमा करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें

दफ़नानाा

- मेरे पापी जीवन को दफनाने के लिए मैंने पानी (विसर्जन) में बपतिस्मा की कब्र में मृत्यु, दफन और मसीह के पुनरुत्थान में डाल दिया, जिससे भगवान मुझे एक नई रचना के रूप में कब्र से उठा सके।

प्राप्त करनाा

- जमा राशि के रूप में पवित्र आत्मा आने वाले समय की गारंटी देता है

बननाा

- भगवान के रूप में एक नया ईसाई मुझे अपने दत्तक बच्चे के रूप में जोड़ देगा
  चर्च क्राइस्ट में अन्य बच्चों की स्थापनाा

रहनाा

- मसीह के प्रति दृढ़ता और आज्ञाकारिता से जीना जारी रखें और
  प्रेरितों की शिक्षाएं "मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप एक ऐसा जीवन जिएं जो आपको प्राप्त हुई बुलाहट के योग्य हो। पूरी तरह से विनम्र और कोमल बनो; सब्र रखो, प्रेम से एक दूसरे की सह लो। मेल के बन्धन के द्वारा आत्मा की एकता को बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करो" (इफिसियों 4:1-3)

प्रशन

1. परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप के लिए किसी ऐसे व्यक्ति के रक्त बलिदान की आवश्यकता होती है जिसमें कोई पाप नहीं था।

   टी. _____ एफ. _____

2. स्वर्ग जाने के कई रास्ते हैं, क्योंकि एक धर्म दूसरे धर्म जितना ही अच्छा है।

   टी. _____ एफ. _____

3. यीशु ने जो आखिरी बातें कही थीं उनमें से एक थी, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र के नाम से बपतिस्मा दो। आत्मा, और उन्हें सब कुछ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ”

   टी. _____ एफ. _____

4. मसीह का संदेश क्या है?

   एक। ____ उसने मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए स्वर्ग छोड़ दिया।

   बी। ____ न्याय में वह सबके पापों को क्षमा करेगाा

   सी। ____ उसने अपना जीवन मनुष्य के पापों के लिए बलिदान के रूप में दियाा

डी। ____ वह प्रेम का देवता है जो चाहता है कि हर कोई उसके पास आए

इ। ____ भगवान ने उसे कब्र से उठाया

एफ। ____ जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उस पर भरोसा रखते हैं, वे बच जाएंगे

जी। ____ ए, बी, डी और ई।

एच। ___ बी और डी।

मैं। ____ ए, सी, ई और एफ।

जे। ____ ए, सी, डी, ई और एफ।

5. उद्धार पाने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

एक। ____मसीह के संदेश को समझे

बी। ____विश्वास करें और स्वीकार करें कि यीशु ही परमेश्वर है जिसने पापों को क्षमा करने के लिए आवश्यक बलिदान के रूप में अपना जीवन दिया

सी। ____अपने जीवन का तरीका बदले

डी। ____ पाप के जीवन के लिए मरो, पानी में दफन हो जाओ और पवित्र आत्मा को प्राप्त करने वाली एक नई, आध्यात्मिक, सृष्टि बनो।

इ। ____ प्रार्थना और प्रेरितों की शिक्षाओं में स्थिर रहे

एफ। ____ सब से ऊपर

जी। ____ ए, बी और ई

एच। ____ बी और ई।

मैं। ____ ए, बी। और डी

<u>निष्कर्ष</u>

पवित्र आत्मा ने, बाइबल को संरक्षित करके, हमें इन चमत्कारों का अप्रत्यक्ष गवाह या पर्यवेक्षक बनाया है। क्या हम उसे शास्त्रियों और फरीसियों की तरह स्वीकार करने से इंकार करेंगे या क्या हम परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा हमारे पापों को क्षमा करने के अवसर के लिए उसकी स्तुति करेंगे? निर्णय हमारा है कि हम अनंत काल कहाँ बिताएँगे।